बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
ध्वनि सिद्धांत

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰के॰ कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

ध्वनि सिद्धांत की अवधारणा :-

ध्वनि सिद्धांत के प्रवर्तन का श्रेय आनंद-वर्धन (नवी सदी) को दिया जाता है। उन्होंने अपने प्रख्यात ग्रंथ ध्वन्यालोक में इस तत्व का सर्वप्रथम व्यवस्थित, व्यापक और स्वच्छ स्वरूप प्रतिपादित किया। उनके स्पष्टीकरण के बावजूद उनके परवर्ती आचार्यों विशेष रूप से धनंजय धनिक, कुंतक, भट्टनायक, महिमभट्ट, क्षेमेंद्र आदि ने ध्वनि सिद्धांत का विरोध किया। परन्तु अभिनव गुप्त (10वी) की 'ध्वन्यालोक लोचन' की व्याख्या और आचार्य मम्मट की 'काव्यप्रकाश' में स्थापना के उपरांत ध्वनि सिद्धांत महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ काव्य सिद्धांत के रूप में स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार ध्वनि काव्य सर्वोत्तम काव्य है, गुणीभूत व्यंग्य मध्यम काव्य है तथा व्यंग्यहीन काव्य अवर काव्य या अश्रेष्ठ काव्य है।

ध्वनि सिद्धांत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यही है कि इसने अपने क्रोड में काव्य से सम्बंध रखने वाले समस्त सिद्धांतों का तत्व समेट लिया। व्याकरण का स्फोटवाद इसके मूल में है। असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य के रूप में रस ध्वनि का एक भेद है। अलंकार ध्वनि, वस्तुध्वनि आदि के अंतर्गत अलंकार वक्रोक्ति आदि की मूल बातें आ जाती हैं। इस प्रकार यह एक बड़े व्यापक काव्य सिद्धांत के रूप में ग्रहण किया गया।

ध्वनि की प्रेरणा वैयाकरणों के स्फोटवाद से मिली। पूर्ववर्ती वर्णों के उच्चारण के संस्कार के साथ अंतिम वर्ण के उच्चारण के अनुभव से अर्थ की

अभिव्यक्ति 'स्फोट' है। किसी भी शब्द के वर्णों के उच्चारण में पहला दूसरा या तीसरा कोई एक वर्ण इष्टार्थ का द्योतक नहीं होता है। 'घटक' में घ ट, या क के अलग-अलग उच्चारण से अर्थ का संकेत करने की शक्ति किसी एक वर्ण में नहीं है। परंतु घ और ट के उच्चारण से प्राप्त पूर्वानुभव के संस्कार के साथ अंतिम वर्ण के उच्चारणानुभव के मिल जाने से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार अंतिम वर्ण के साथ पूर्वोच्चारित वर्णों के संस्कार से अर्थ का प्रस्फुरन ही स्फोट है।

जिस प्रकार शब्द के अलग-अलग वर्णों के उच्चारण से अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती, उसी प्रकार अभिधा या लक्षणा के द्वारा भी सम्पूर्ण अर्थ और विशेष रूप से इष्ट या अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं होती। यह इष्ट अर्थ व्यंजना के द्वारा प्राप्त होता है। अभिधा और लक्षणा के उपरांत व्यंजना से ध्वनित होने वाला यह इष्ट और चमत्कारिक अर्थ ही ध्वनि है। इस ध्वनि को ध्वन्यालोककार ने 'अनुरणन' के रूप में माना है। जिस प्रकार घंटे पर आघात करने से पहले टंकार और फिर मधुर झंकार एक के बाद एक अधिक मधुर ध्वनि निकलती है उसी प्रकार व्यंग्यार्थ भी ध्वनित होता है। इस प्रकार ध्वनित होने वाला व्यंग्यार्थ जहां पर प्रधान होता है वहां ध्वनि मानी गयी है। आनंदवर्धन ने लिखा है -

"यत्रार्थ: शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनी कृत स्वार्थौ।
व्यक्त: काव्यविशेष: स ध्वनिरिति सूरिभि: कथित:॥"

अर्थात 'जहां (वाच्य) अर्थ और (वाचक) शब्द अपने अपने अस्तित्व को गौण बनाकर जिस (विशिष्ट) अर्थ को प्रकट करते हैं वह (अर्थ) ध्वनि कहलाता है।"

इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि जो अर्थ, वाच्य अर्थ की अपेक्षा भिन्न होता है उसे ध्वनि कहते हैं। ध्वनि को ध्वन्यार्थ, व्यंग्य, व्यंग्यार्थ, प्रतीयमान, अवगमित, द्योतित अर्थ आदि भी कहते हैं।

आनंदवर्धन ने ध्वनि के स्वरूप को समझाने के लिए उदाहरण दिया है—

"प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्
यत्तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवांगनासु॥"

अर्थात जिस प्रकार किसी अंगना के सुंदर अवयव और उनसे फूटता हुआ लावण्य भिन्न-भिन्न पदार्थ है, उसी प्रकार महाकवियों की वाणी में प्रसिद्ध अवयव (अर्थात वाचक शब्द और वाच्य अर्थ) और उनसे अभिव्यक्त प्रतीयमान अर्थ भी भिन्न भिन्न होते हैं।

ध्वनि काव्य का संबंध व्यंजना शक्ति से है जो शब्द शक्ति का एक भेद है। शब्द शक्तियां तीन होती हैं। अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। व्यंजना शक्ति से जिस अर्थ का बोध होता है उसे ही व्यंग्यार्थ कहा जाता है।

जब अभिधा और लक्षणा किसी अर्थ को अभिव्यक्त करने में असमर्थ रहती है तो उस अर्थ की अभिव्यक्ति व्यंजना शक्ति से होती है। व्यंजना का तात्पर्य है स्पष्ट करना खोलना या विकसित करना।

इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है 'गंगा में गांव' इसका अर्थ देने में अभिधा असमर्थ है

क्योंकि गंगा में गांव नहीं हो सकता। लक्षणा से अर्थ निकला कि गंगा के समीप गांव। परन्तु इसके बाद भी इसका अर्थ 'पवित्र' शीतल गांव' व्यंजना शक्ति के द्वारा ही संभव है। एक अन्य उदाहरण है, —

'मीत तिहारे बदन पर मूरखता दरसात।
मम मुख दरपन बिमल है आजु विदित यह बात॥"

यहाँ मुखदर्पण का अर्थ करने में अभिधा असमर्थ है। सारोपा लक्षणा के द्वारा यह अर्थ प्रतीत हुआ कि मेरे मुख में तुम्हारा मुख दिखायी देता है। इसके बाद भी वांछित अर्थ नहीं च पता चला जो व्यंजना द्वारा निकलता है, वह यह कि "मूर्खता जो तुम्हें दिखायी देती है वह तुम्हारी ही है जो मेरे मुख दर्पण में प्रतिबिंबित हो रही है क्योंकि तुम सामने खडे हो। वास्तव में मैं मूर्ख नहीं, तुम मूर्ख हो"

आचार्यों ने व्यंजना के भी कई भेद किए हैं। व्यंजना की प्रधानता के आधार पर ध्वनि-सिद्धांत के अन्तर्गत काव्य के तीन भेद किये गये हैं - ध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य और अवर या चित्र काव्य। जिस काव्य में वाच्यार्थ से अधिक चमत्कार व्यंग्यार्थ में होता है वह ध्वनिकाव्य है। यह उत्तमकाव्य माना जाता है। जहां काव्य में वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ गौण या कम चमत्कारक होता है वह गुणीभूत व्यंग्य काव्य होता है, यह मध्यम श्रेणी का काव्य माना जाता है। जहं पर व्यंग्यार्थ नहीं होता वह काव्य साधारण या अवरकाव्य या चित्रकाव्य माना जाता है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)